शमीम बानो के कुछ सवाल

शांति व माया

शमीम बानो आज भी इंसाफ़ पाने के लिए जूझ रही है। उसके बच्चों को हक मिलेगा या नहीं–वह नहीं जानती। कानून को सबूत चाहिए पर ज़िन्दगी की जद्दोजहद में आदमी की संवेदना और विश्वास को कोई सबूत नहीं चाहिए। वह सिर्फ संघर्ष की शक्ति देता है।

शमीम बानो दक्षिण दिल्ली की एक ग़ैरकानूनी बस्ती सुभाष कैम्प में रहती है। 15 गज की झुग्गी में शमीम बानो की ज़िंदगी में आये इतने तूफान- एक ही बेटी पैदा हुई। पड़ोस के तानों से बेटे की उम्मीद सुलगती रही पर यह आस पूरी हुई नहीं। पति गुजर गया। शमीम ने फैसला लिया-"एक ही बेटी पर ज़िंदगी निकाल दूंगी। दूसरा पति नहीं करूंगी।" अपनी कमाई से बेटी का निकाह किया। बहुत उम्मीद थी शमीम को इस शादी से। दामाद से मानो मां बेटे की कमी पूरी कर रही हो मगर शमीम के जीवन में वक्त बदला नहीं। दामाद भी उसे पापी ही मिला।

सपना टूटा

बेटी रूकय्या की शादी हुए महीना भी नहीं निकला कि वह शराब पीकर मारपीट करने लगा। शमीम का मन तड़प उठा। अपनी बेटी का हाथ इसलिये तो आदमी के हाथ में नहीं दिया था कि वह भूखी प्यासी पिटती रहे। वह गुस्से में फुफकारती हुई बेटी के घर पहुंच गयी। अपनी इकलौती औलाद के सुख की ममता और समाज का डर कि लोग कहेंगे-'आप अकेली है तो बेटी को अलग करना चाहती है।' इस सोच से वह दामाद और बेटी को कुछ समय के लिए अपने घर ले आई। दामाद गुड़ की तरह मीठा बनता रहा। शमीम को दामाद पर विश्वास होने लगा और एक शाम ऐसी आई कि दामाद ने अपनी सास को चाय बनाकर कप पकड़ाते हुए कहा- "अम्मा बहुत

थकी हो चाय पी लो।" शमीम ने दो घूंट चाय पी ही थी कि उसे नशा सा आने लगा। दामाद को लगा कि चाय में मिलाई नशीली दवा का असर हो गया और वह हैवान अपनी असल पहचान में आ गया। अपनी सास का बलात्कार करने के इरादे से उस पर झपट पड़ा। मगर शमीम ने अपने नशीले ढीले हाथ पैरों से लड़ने की कोशिश की और चीखने चिल्लाने लगी। शोर सुनकर उसकी बेटी, बच्चे व पड़ोसी इक्ट्ठे हो गये, पर तब तक वह जुल्मी भाग गया। कुछ दिनों बाद वह चाकू दिखाता हुआ सारी गली में धमकी देता हुआ न जाने किस गली में गायब हो गया। शमीम ने उसी रोज थाने में रिपोर्ट दर्ज करवाई कि हम मां बेटी की जान खतरे में है।

उसने ठान लिया

रूकय्या ने तब तय किया—"मैं नौकरी करूंगी। तलाक व गुजारे भत्ते की मांग करके बच्चों को खुद ही पाल लूंगी। मां-बेटी वकील करने या नौकरी खोजने अब स्कूटर में ही जाते। मां साये की तरह अपनी बेटी के साथ रहती, "वो जल्लाद कुछ भी कर सकता है। मैं अपनी गली और झुग्गी के बाहर कैसे उस आदमी से लड़ सकती हूं" और यूं बच्चों की हारी-बीमारी, रोज का खाना-पीना, आने जाने में कर्जा बढ़ता जा रहा था और साथ-साथ दामाद की धमकियां। कभी कोई आकर कहता, "गली के मोड़ पे चाकू लिए देखा था हमने।" कभी रिश्तेदार बताता "हमें कह रहा था, मैं देख लूंगा।" मां का मन यह सब सुनकर बैचेन हो जाता। रुकय्या समझाती—"जो गरजते हैं वो बरसते नहीं।" इस डर-अडर, विश्वास-अविश्वास में झूलते कुछ दिन बीत गये तो शमीम सोचने लगी—"घर में बैठे दिन-दहाड़े कैसे हिम्मत होगी कि वो मार दे। दस कदम की ही तो बात है सौदा लेकर आती हूं। यूं कब तक चलेगा।

एक दिन रुकय्या चावल बीन रही थी। उसका 3 साल का लड़का कंधे पे खड़ा ज़िद कर रहा था। लड़की गोद में पड़ी थी और शमीम अपनी चौखट से पीठ फेरकर कुछ कदम ही आगे गई थी कि

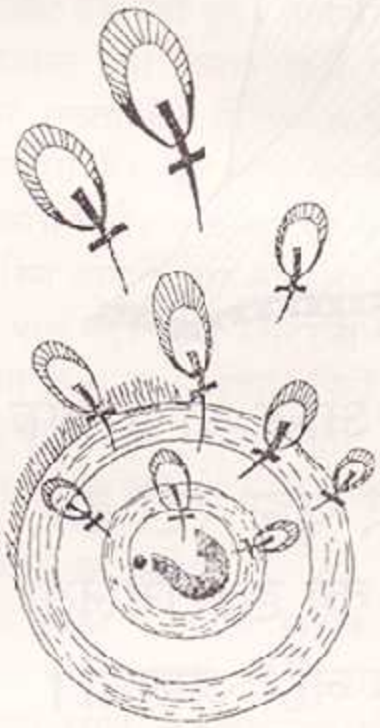

बच्चों की चीखें सुन वह पीछे दौड़ती हुई आ गई।

झुग्गी का गोबर लिपा फ़र्श खून से सराबोर था। यही रुकय्या अभी चावल बीनती, बेटे को डांटती लहूलुहान एक ओर लुढ़की पड़ी थी। दोनों बच्चे जोर-जोर से बिलख कर कह रहे थे 'पापा ने मारा है।' शमीम की चीख कलेजे में ही समा गयी।

शमीम के सवाल

इस हादसे के एक हफ्ते बाद जब हमें इस घटना की खबर मिली हम शमीम से मिलने गए। उसका सूना मन, उसके सूखे नयन और होंठों में झलक रहा था। ग़म और आक्रोश की तीखी—चुभन की कड़वाहट में वो बोली अब खून के बदले खून वाली सजा तो रही नहीं। वह आकर मुझे मारेगा। वो आज बंद है कल आजाद हो जाएगा। कानून वाले कहते हैं अपनों के नहीं किसी और के बयान

चाहिये। वो कहां से लाऊं। अब हमारे पास न तो आदमी है ना पैसा। कौन सुनेगा, लड़की के दो बच्चे देखूं या कमाने जाऊं? क्या खिलाऊं इन्हें?"

अरसा बीत गया

अब भी शमीम बानो अपने ही सवालों से जूझती बेटी के बच्चों को पाल रही है। अपनी इस तपस्या में वो कामयाब होगी या नहीं, वह नहीं जानती। कोठियों और घरों में काम करके वह उन्हें पाल रही है। दामाद कुछ कर न दे, इस भय से गांव और शहर के बीच घूमती रहती है। बेटी हाथ से गई। दामाद ज़मानत पर छूट गया। कानून को सबूत चाहिए, पर ज़िन्दगी की जद्दोजहद में आदमी को संवेदना और विश्वास को कोई सबूत नहीं चाहिए। वह सिर्फ संघर्ष की शक्ति देता है। यह एक ऐसा तप है जिसका फल भी उसे मिलने वाला नहीं। बच्चे बड़े होकर बाप के नाम से जाने जाएंगे। उस बाप के नाम से जिसने उनसे ममता का हक छीन लिया। उसे कौन पूछेगा तब? शमीम बानो अपनी तमाम मेहनत के बावजूद इंसाफ के लिए लड़ रही है। मुकदमे की तारीख पर जाती है। अपनी जान की परवाह उसे नहीं। चिन्ता है तो बच्चों की, उनके भविष्य की। क्या कानून उन्हें उनका हक देगा? □